21/7/20
Tue

BA III H Paper VI

Rural Sociology

Indian caste system - जाति प्रथा

Dr Arun Kumar
Reader
Dept of Sociology
Shershah College
Sasaram

जाति शब्द का उल्लेख होते ही हमारा ध्यान जाति व्यवस्था की ओर जाता है इसका कारण यह नहीं है कि यह केवल भारत में ही विद्यमान है वरन् इसका कारण यह है कि भारत में जाति - प्रथा की पराकाष्ठा है। कोनिंग ने लिखा है कि "जाति की प्रतिष्ठित भूमि भारत है"

जाति भारतीय सामाजिक व्यवस्था में पायी जाने वाली स्तरण का एक अनुपम स्वरूप है। इसका अध्ययन अनेक विद्वानों द्वारा किया गया है। एन० आर० वाडिया का मत है कि जाति शब्द अंग्रेजी भाषा के Caste का हिन्दी अनुवाद है Caste की व्युत्पत्ति — पुर्तगाली भाषा के (Casta) शब्द से हुई है जिसका अर्थ मत विभेद तथा जाति से लिया जाता है। जाति शब्द की उत्पत्ति का पता सन् 1665 में ग्रेसिया डी ओरेटा नामक विद्वान ने लगाया उसके बाद अंग्रेज के अबे डुबॉय ने इसका प्रयोग प्रजाति के संदर्भ में किया।

मजूमदार एवं मदान — के अनुसार - जाति एक बंद वर्ग है। दूसरे — जब एक वर्ग प्रायः वंशानुक्रम पर आधारित होता है तो हम उसे जाति कहते हैं।

मैकाइवर एवं पेज के अनुसार - जब व्यक्ति की प्रस्थिति पूर्वनिश्चित होती है अर्थात जब व्यक्ति अपनी - प्रस्थिति में किसी भी तरह के परिवर्तन की आशा लेकर उत्पन्न नहीं होता तब वर्ग जाति के रूप में स्पष्ट होता है।

जाति जन्म पर आधारित ऐसा समूह है जो अपने सदस्यों की खान, पान विवाह व्यवसाय और सामाजिक सम्पर्क के सम्बन्ध में कुछ प्रतिबन्ध मानने के लिए निर्देशित करता है, संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि जाति व्यवस्था उच्च-नीच स्थिति वाले अन्तर्विवाही समूहों में समाज का ऐसा खण्डात्मक विभाजन है जिसका आधार जन्म है। ब्राह्मण के घर जन्म लेने वाला ब्राह्मण कहलायेगा, तथा शूद्र के घर जन्म देने वाला शूद्र कहलायेगा।

जाति की विशेषताएं — (1) समाज का खण्डात्मक - विभाजन - भारतीय जाति प्रथा ने हिन्दू समाज को अनेक छोटे व बड़े खण्डों एवं उपखण्डों में विभाजित कर दिया है।

— 2

Scanned by TapScanner

प्रत्येक खण्ड सदस्यों के पद, प्रस्थिति एवं कार्यों को तय करता है। जाति-प्रधान में सदस्यों की सामुदायिक भावना सम्पूर्ण समाज के बजाय अपनी जाति तक ही सीमित होती है। जाति के नैतिक नियमों का पालन करना - व्यक्ति अपना कर्तव्य समझता है। ऐसा न करने पर जाति पंचायत उसे दण्ड देती है।

(2) स्तरण — जाति प्रथा में उच्च-नीच का स्तरण - उतार-चढ़ाव पाया जाता है। समाज में प्रत्येक जाति की एक निश्चित सामाजिक स्थिति पायी जाती है।

(3) भोजन और सामाजिक सहवास पर प्रतिबन्ध — जाति व्यवस्था में भोजन दो प्रकार का होता है। कच्चा और पक्का - कच्चा भोजन एक व्यक्ति अपने से ऊँची व अपनी जाति के सदस्यों के हाथ का बना होने पर ही ग्रहण कर सकता है। जबकि पक्का भोजन अपने समकक्ष अथवा निम्न जातियों के हाथ का ग्रहण कर सकता है किन्तु अछूत एवम् शूद्र जातियों का नहीं।

(4) जाति जन्म से निर्धारित होती है। — एक व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता है जीवन पर्यन्त उसी का सदस्य बना रहता है।

(5) सामाजिक व धार्मिक विशेषाधिकार — जाति व्यवस्था में प्रत्येक जाति की कुछ विशेषाधिकार अथवा निर्योग्यताएँ प्राप्त हैं। ऊँची जातियाँ अनेक सामाजिक, राजनैतिक धार्मिक विशेषाधिकारों का उपयोग करते हैं। ऊँची जातियाँ अनेक सामाजिक राजनैतिक धार्मिक विशेषाधिकारों का उपयोग करती हैं। निम्न जातियों को कई सुविधाओं से वंचित किया गया है।

(6) परम्परागत व्यवसाय — प्रत्येक जाति की एक निश्चित व्यवसाय भी होता है जो अपने पूर्वजों से प्राप्त होता है।

(7) विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्ध — प्रत्येक जाति में विवाह सम्बन्धी नियम पाये जाते हैं जातियाँ अनेक उपजातियों में बटी हुई हैं। प्रत्येक उपजाति अपने समूह में विवाह करती है दूसरी जातियों में विवाह करने का छूट नहीं है, ऐसा करने वाले को जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता है। जाति अन्तर्विवाह ही जाति प्रथा का सार तत्व है।

Dr Arun Kumar
Reader
Dept of Sociology
Shershah College
Sasaram

Scanned by TapScanner